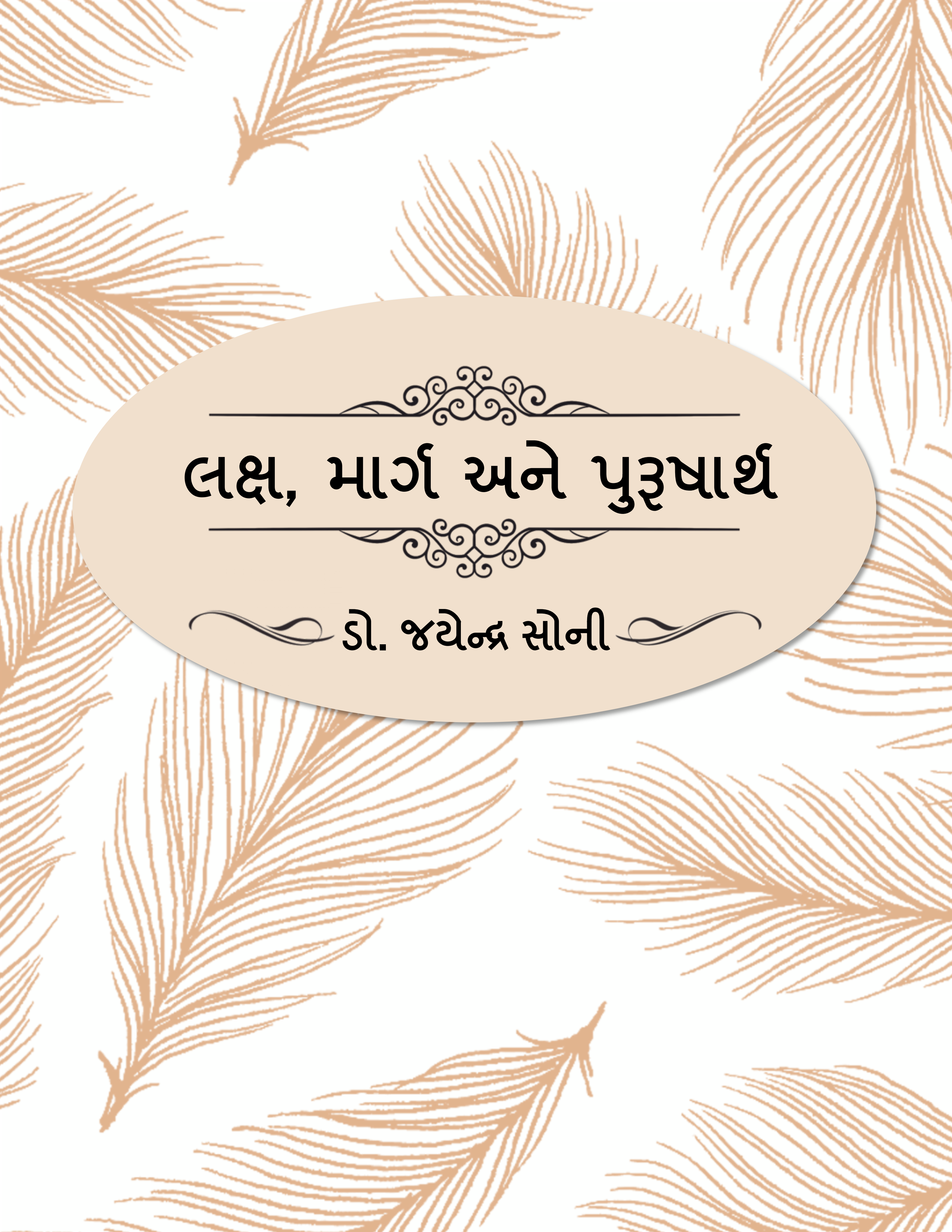

# લક્ષ, માર્ગ અને પુરૂષાર્થ

ડો. જયેન્દ્ર સોની

# લક્ષ, માર્ગ અને પુરૂષાર્થ

(*"લક્ષ, માર્ગ અને પુરૂષાર્થ"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

## लक्ष, मार्ग अने पूरुषार्थ (१)

कहेवाय छे के जीवात्मा ने चोराशी लाख योनीओ मां भटकवु पडे छे. मनुष्येतर योनीओ मा जीवात्मा नुं कोइ लक्ष होइ शकतु नथी कारणके तेने विवेक बुद्धि, सारासारनो विचार करवांनी क्षमता होती नथी. ते खोराक अने आराम माटे आमतेम आथड्या करे छे. कोई पण पशु ने जोइशु तो तेने क्यां जवुं छे ते निश्चित होतुं नथी. मात्र स्थळांतर कर्या करे छे. पक्षीओ पण दिवस भर उड्या करे छे. पाणी मा माछलिओ पण दिशा विहीन तरति होय छे. समग्र प्राणी सृष्टि नी आ स्थिति छे. तेमने न तो पोतांना स्वरूप नु ज्ञान छे, न तेमना जीबन नु कोई लक्ष होय छे. तेथी तेमने पोताना उद्धार नी सभानता नो के तद्विषयक विचारवानो प्रश्न ज नथी होतो. जीवन समाप्त थये पाछो कोई अन्य योनि मा जन्म लेवो पड़े छे. बस आ घटमाल अविरतपणे चालती रहे छे.

आपणे पण आवी अनेक योनीओ मा भटक्या पछी आपणा पूर्व जन्मना पुण्य-कर्मो नो उदय थतां मनुष्य योनी प्राप्त करी छे. ए आपणु सौभाग्य छे. आहार, निंद्रा, भय अने मैथुन ए चार बाबतो मा तो आपणे पण पशु समान ज छीए, परंतु भगवाने मनुष्य ने विशिष्ट बुद्धि अने विचारशीलता प्रदान करी छे, पोताना हित-अहित समाजवा नी क्षमता आपी छे, सारु-ख़राब पारखवा नो विवेक आप्यो छे. तेथी मनुष्यने 'विचारशील प्राणी' कह्यो छे. ए रीते मनुष्य अनेक प्रकारे चढियातो छे. तेने उत्तरोत्तर विकास कर्यो छे. ज्ञान प्राप्त कर्यु छे. अनेकविध प्रगति करी छे.

तेम छतां मनुष्य जीवन मा मात्र सुख ज नथी. विविध प्रकार ना दुःख नो अनुभव तेने थाय छे. कोईने कोई प्रकार ना दुःखो नो, शारीरिक मानसिक, भावनात्मक मुश्केलीओ नो सामनो तेने जीवन ना अंत सुधी करवो पडतो होय छे. केटलाक ने तो नरकवत पीड़ा अनुभववी पड़े छे. कोइक नानी वय माज कोईने कोई कारणसर मृत्यु पामे छे, तो बीजा वृद्धावस्था भोगवी देह छोड़े छे. वृद्धावस्थामा गात्रो ढीला पड़े छे. परावलंबी बनवु पड़े छे. आत्मनिर्भरता खोई देता माणसने आर्थिक, मानसिक, शारीरिक तकलीफों आवी पड़े छे. बिमारीं नो शिकार बनवु पड़े छे. अंते मृत्यु ए ध्रुव सत्य छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष्य, मार्ग अने पूरुषार्थ" (२)

(चालु)...... आपणा सौनी आ वास्तविक स्थिति छे. जेओ विचारशील होय छे, तेने आमाथी छूटवु केवीरीते तेवां विचारो आवता होय छे. बाकी तो पशुवत जीवन पुरु करे छे. केटलाक पूर्वजन्मों ना पापकर्मो ना फल भोगवता जीवन समाप्त थाय छे, अथवा बीज तेमना आगला जन्मों ना पुण्यकर्मो ना फल स्वरपे

सुख साहेबी माणे छे तो मद मा छकी जई वास्तविता नो विचार कर्या विना फरी खोटा कामो करी जन्म-मरण नी घटमाल मा पुनः भटकवा बीजी, त्रिजी, चौथी एम् अनंत योनीओ मा अटवाएल रहे छे.

मोटाभागना लोको मानता होय छे के आ जीवन भोग माटे मल्यु छे. तेथी मौज शोख माणी लेवा एज जीवन नी सार्थकता छे. पुनर्जन्म, अध्यात्म, ईश्वर आ बधी मनघडंत वातो छे, मर्या पछी स्वर्ग मा जवानी के मोक्ष पामवानी वातो शेखचल्ली ना विचारो छे. माटे आ जीवन मां ज इन्द्रियो ना सुख भोगवी लेवा जोइए. आवी विचारसरणी ने 'चार्वाक विचारधारा' कहेवाय छे, जेने माननारो एक मोटो वर्ग छे. श्रीवल्लभाचार्यजी आने 'प्रवाही सृष्टि' कहे छे, जे सृष्टि ना अंत सुधी जन्म-मरण ना चकरावा मां भम्या करे छे.

शास्त्रोए, दार्शनिक विचारकोए, संत-महात्मा, आचार्योए वास्तविक परिस्थिति नो चितार रजु करेलो छे. जीवन ना सातत्य ने समजाव्यू छे. तेम छतां आपणे तेना तरफ दुर्लक्ष सेवीए छीए. न तो तेने जाणवानी दरकार करीए छीए, अने कदाच जाणता होईए छतां नजरअंदाज करता होईए छीए. परिणामे आपण ने प्राप्त थयेलु मानव जीवन निरर्थक जाय छे.

तदर्थ सौ प्रथम आवश्यकता सभानता केळववानी छे. आपणे चालता होईए अने रस्ता मा खाडो आवे तो ते विशे जो आपणे सभान न होइए तो परिणाम समजी शकाय छे. आपणे गाफेल रहिए तो खाड़ा मा पडवानु निश्चित ज् होय छे. तेवीज रीते आपणी जीवन यात्रा ना भयस्थानो विशे पण जो आपणे सभान न बनिए, वास्तविक परिस्थिति थी माहितगार न थईए तो तेंनु परिणाम तो भोगववुज पड़े छे. कबीरजी कहे छे - "फिर पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत". माटे समय रहेते चेती जवुं एमांज बुद्धिमानी गणाय !. नहितर भेद शुं आपणामा अने पशुओमां ? अरे, पशुओं पण रस्ता मां खाडो आवे तो बाजुमां थई ने चाले छे. खड़ा मां पड़ता नथी. अने मनुष्य पोताने बुद्धिशाली गणे छतां ! शुं कहेवु ?

माटे ज् कह्यु छे - "चेततो नर सदा सुखी". प्रारब्ध कर्मो ना परिपाक रुपे आ जन्म मा मनुष्य योनी प्राप्त थई छे. जीवन ना अनेक क्षेत्रों मा आपणे नफ़ा-नुकसान नो विचार करता होईए छिए ! आपणो फायदों शेमां छे, ते जोता होईए छिए अने तदनुसार व्यवहार करीए छीए . तो पछी न जाणे केटली योनीओ माथी पसार थया पछी सद्भाग्ये मनुष्य योनी प्राप्त थई होय तो तो शा माटे तेना लाभ नो विचार न करवो ! जो सभानता नहीं केळवीए तो फरी पाछा चोराशी लाख ना फेरामां !. .......क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पुरुषार्थ" (३)

(चालु)......भगवान बुद्ध नी पूर्वावस्था मा राजकुमार सिद्धार्थे ज्यारे वृद्ध अने रोगी व्यक्तिओ तेमज मृत पुरुष नी ननामी ने जोया त्यांरे जीवन नी असारता समज मां आवी अने पोताना जीवन प्रत्ये सभान बन्या. परिणाम स्वरूप सत्य नी शोध मा परिवारने छोड़ी रात्रिना अंधकार मां निकळी पड्या.

राजा परिक्षितने श्रृंगी ऋषी ना शाप नी जाण थई के सातमे दिवसे तक्षक नाग ना दंश द्वारा तेमनु मृत्यु निश्चित छे त्यांरे तुर्तज तेओ सावध बनी गया. पोतानी पासे मात्र सात दिवस छे, ते जाणी तत्क्षण तेमणे निर्णय लई पुत्र जन्मेजय ने राज्य सोंपी, सर्वनो त्याग करी आत्मकल्याण अर्थे गंगाजीना तट पर जई बैठा, अने श्रीशुकदेवजी पासे भागवतजी नु श्रवण करी मोक्षने मार्गे सिधाव्या.

जीवन नी वास्तविकता थी परिचित थता सभानता ना कारणे पोतांना उद्धार माटे जीवन ने साची दिशा मा वाळनार अनेक सावध महापुरुषोनी जीवन कथाओ इतिहास ने पाने आलेखायेली छे, जे आपणे माटे मार्गदर्शक छे. परंतु शुं आपणे कशो बोधपाठ लईऐ छीए !.

अनेक योनीओ मा भटक्या पछी सौभाग्य वश प्राप्त थयेला मानव देह ने कारणे, शास्त्र वचनो, संतो ना उपदेशों, आचार्योनी वाणी द्वारा कर्मोना बंधन ने लीधे थता जन्म-मरण ना चकरावा मांथी बहार निकळवानी अमूल्य तक नी समज प्राप्त थवा छतां आपणे कुम्भकर्ण नी निंद्रा मा सुतेला रहिये छीए अने वास्तविक परिस्थिति थी चेतवा ने बदले गाफेल रही कीमती मनुष्य जीवन ने वेडफी दईए छीए. शुं ते आपणु दुर्दैव नथी ?

जेओ पुष्टिमार्गीय होवानो अहं पोषी रह्या छीए एवा आपणने मात्र मनुष्य देह ज प्राप्त थयो नथी, परंतु विशेष भगवद कृपाथी वैष्णव कुल मा जन्म थयो छे, भगवद अवतार स्वरूप श्रीवल्लभाचर्यजी जेवा गुरूए आपणो उद्धार करवा आपणो हाथ ग्रहण कर्यो छे, अने भगवाने पुष्टिजीव तरीके आपणु वरण करेलु होवा छतां आपणे आपणा स्वरूपनी विस्मृति थयेली हती तेनी स्मृति ताज़ी करावी पोताने शरणे लीधेल छे. शु वास्तव मां आपणे एनाथी सभान छीए ? ...... (क्रमशः)....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पूरुषार्थ" (४)

(चालु) ........ज्यारे विद्यार्थी हाइस्कुल नी परीक्षा पास करे छे त्यां सुधी मा तेनामां जीवन नी वास्तविकता नी समज आवी गई होय छे. ते सभान बन्यो होय छे के तेणे जीवन मा कोई पदवी प्राप्त करवी जरुरी छे. तेने जीवन मा उन्नति करवा कोइ लक्ष्य नक्की करवु पडशे के ते आगळ शुं बनवा मागें छे. तेने भणी ने एन्जीनियर बनवु छे, के वकील के डोकटर, तेनो निर्णय तेणे लेवो पडशे, जेथी ते योग्य कॉलेज मा प्रवेश मेळवी शके. जो ते लक्ष निर्धारित न करे अने कोइपण कॉलेज मा दाखल थई जाय तो कोई चोक्कस डिग्रीना अभावमां तेने जिंदगी भर भटकवु पड़े.

आपणे घरे थी निकली रस्ता पर आवी ने उभा होईए. रस्तो तो डाबी अने जमणी बन्ने बाजू जतो होय. जो आपणे नक्की न कर्यु होय के क्यां जवु छे तो कई बाजू वळवु तेनो निर्णय केवी रीते लेवाय ?. चोराया ऊपर पहोंचीने जो आपणु कोई लक्ष नक्की न होय तो कये रस्ते आगळ वधवु ते केम खबर पड़े ?

आवीज वात आपणी जिंदगी नी छे. प्रारब्ध कर्मोना फल स्वरूपे मनुष्य योनी प्राप्त थई छे. तेना कारणे आपणु हित विचारवा नो अवसर मल्यो छे, जे अन्य योनीओ मा प्राप्त थई शक्यो न होत. सुख-दुख ना अनुभवथी जीवन नी वास्तविकता समजाई छे. बुद्धि ना कारणे ज्ञान पण थयु छे के आपणु साचु स्वरूप शुं छे. शास्त्रो समजावे छे के अनंत काल थी आपणे अनेक योनीओ मा भटकी रह्या छीए. जन्म-मरण ना चकरावा मां फरी रह्या छीए. आ समझ मनुष्य होवाना कारणे तेमज शास्त्रो द्वारा के संत द्वारा अथवा सद्गुरु द्वारा प्राप्त थई छे. जो साची हकीकत थी आपणे वाकेफ थया होईए तो शुं योग्य निर्णय लेवो आवश्यक न गणाय ?

उपरोक्त उदाहरणों मा राजकुमार सिद्धार्थे हकीकत जाणी तो तत्काल पोतानु लक्ष नक्की करी लीधु के जो दुःख जीवन नी वास्तविकता छे, तो तेनी निवृत्ति नो उपाय शोधवो जोइए. तेमनु लक्ष हतु मानव

जात नु कल्याण ! राजा परीक्षिते वास्तविकता थी वाकेफ थता ज तत्क्षण निर्णय लई पोताना उद्धार नु लक्ष नक्की करी लीधुं.

आपणे पण आपणु लक्ष नक्की करवु जरुरी ज नहीं, आवश्यक छे !.

क्रमशः ......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पूरुषार्थ" (५)

(चालु( ........जेवीरीते एक विद्यार्थिए पोताना भविष्यनी करकिर्दी घडवा माटे लक्ष बनाववु जरुरी छे जेथी तेंनु जीवन सुखी थाय, तेम प्रत्येक मनुष्ये पोताना जीवन ने सार्थक करवा ध्येय नक्की करवु आवश्यक छे. ध्येय विना मनष्य भटकतो रहे छे अने जीवन बर्बाद थाय छे. मोटाभागना लोको जीवन मात्र जीवी जता होय छे. जन्म लइ मोटा थता संसार माड़ी संतति उत्पन्न करे, मले ते धंधों रोजगार करी व्यवहार नभावे, भाग्यथी जो धन नी अधिकता होय तो मोज मजा माणी ले. रोग-ग्रस्त थता के वृद्ध थया पछी जगत मांथी विदाय ले. न पोताना प्रत्ये, के न जगत प्रत्ये नी सभानता. मात्र पशुवत जीवन जीवे छे !.

केटलाक लोको कोइक धार्मिक आस्था धरावता होय के तद्विषयक कोई उपक्रम सेवा - पूजादि पण करतां होय छे. छतां ते एक औपचारिक क्रियावत, रोजिंदा अन्य कार्यो नी माफक करतां होय छे. ते विशे गम्भीर होता नथी के तेनो कोई विशेष हेतु होतो नथी. मोटाभाग ना लोको नी आ स्थिति होय छे.

बहु ओछा लोको जीवन ने गंभीता थी ले छे. पोतांना अस्तित्व विशे के जगत नी गतिविधिओ थी सभान होय छे. शास्त्रोमा करेला वास्तविक्ता ना खुलासा विशे विचारता होय छे. गीता मां भगवाने कर्म नी भूमिका बतावी छे. बंधन अने मोक्ष ना कारणो समजाव्या छे. तदनुसार जन्म-मरण ना चकरावा मां थी छुटवा ना उपाय सूचव्या छे. मनुष्ये विचारवानुं होय छे के ते शुं इच्छे छे ! भोग भोगववा स्वर्गादि नुं सुख, के तेमाथी कायमी छुटकारा रूप मोक्ष के तेथी पण कांई विशेष !

भगवाने तो सौनुं भाग्य घडी राख्यू छे, परंतु तेने बुद्धि आपी छे, ज्ञान अर्जित करवा नी क्षमता आपी छे, पोताना हित नो विचार करवानो विवेक पण आप्यो छे. तदनुसार आपणे आपणा जीवन नुं ध्येय नक्की करवु जोइए, तेने प्राप्त करवा योग्य मार्ग अपनाववो जोइए अने तदर्थ आवश्यक पुरुषार्थ करवो जोइए. आ अभिगम आपणो होवो जोइए. पुरूषार्थ नुं शु फल आपवुं ते भले भगवान नक्की करे ! आपणे जे करवानुं छे, तेतो आपणे करीए !. तेथीज गीता मां भगवान कहे छे - "कर्मण्येवाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचन". क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पुरुषार्थ" (६)

(चालु) ..........गीतामा कह्यु छे तेम भगवाने दैवी अने आसुरी एम बे प्रकार नी सृष्टि उत्पन्न करी छे. श्रीवल्लभाचार्यजी पुष्टि, मर्यादा, प्रवाही तेमज अनेक मिश्र सृष्टि ना प्रभेद बतावे छे. तेमनी रुचि,

अधिकार अने फल स्वाभावीक रीते जुदा जुदा होय. तदर्थ तेमनी मनोवृत्ति भिन्न भिन्न होवानी. ए व्यवस्था भगवाने पोतानी लिलार्थे करी छे, परंतु भगवाने मनुष्यने आपेली विवेक-बुद्धिथी तेणे पोतांना उत्कर्षनो विचार करवो जरुरी छे, अन्यथा तेनी पशु योनि थी विशेषता निरर्थक गणाय. शास्त्रो द्वारा पोताना स्वरूप विशे सभानता ना कारणे तेणे पोतानु लक्ष निर्धारित करवुं जरुरी छे.

प्रत्येक मनुष्य सुखनी कामना करतो होय छे. कोई दुःख नी अपेक्षा राखे नहीं, बल्के तेमांथी छुटकारो मेलववा इच्छतो होय छे. तदर्थ प्रत्येक मनुष्य सत्कर्म करवा माटे प्रेरित थई प्रयत्न करे छे, जेथी तेनु लक्ष ते प्राप्त करी शके, चाहे ते स्वर्गादि सुख होय, के जन्म-मरण ना चक्कर मांथी मुक्ति, अर्थात मोक्ष. श्रीवल्लभाचर्यजी कहे छे - भगवानेव फलं", स्वयं भगवान ज फलरुप छे.

आम जुदी जुदी कक्षा ना जीवो नुं लक्ष भिन्न भिन्न छे. प्रवाही जीवो लोकिक सुख नी कामना करे छे, केटलाक स्वर्ग ना सुख ने पोतानु लक्ष बनावे छे, छे. मर्यादा जीवो विभिन्न प्रकार नी मुक्ति - सालोक्य , भगवान ना लोकमां स्थिति ; सारूप्य, भगवान जेवु रुप ; सामीप्य, भगवान नु अहर्निश सानिध्य; अथवा सार्ष्टि, भगवान जेवा ऐश्वर्य ने मेलाववा मांगता होय छे, तो बीजा सायुज्य अर्थात भगवान मां लीन थवा, भगवान साथे एकात्मकता अनुभववा इच्छता होय छे. आ बधा विभिन्न प्रकारनी सिद्धिओ जेते जीवो नी कक्षानी लाक्षणिकता ना कारणे तेमनी रुचि अने अधिकार ने लीधे होय होय छे.

परंतु जे पुष्टिजीवो होय छे, जेमने भगवान मां सहज प्रेम ना कारणे तेमनु माहात्म्य जाणी ने तेमनी निष्काम भक्ति करवा मां रूचि होय छे, तेओ नुं लक्ष न तो स्वर्गादि सुख होय छे, न कोई पण प्रकार नी मुक्ति नी तेओ कामना करे छे. तेओ मात्र भगवान ना स्वरूप नी अपेक्षा सेवे छे, सतत भगवान ना स्वरूप नो आनंद , तेमना स्वरूपानंद ने माणवा मले एज तेमनु लक्ष होय छे. तदर्थ निर्गुण भक्ति नी ज आकांक्षा सेवे छे.

जो मनुष्य आ प्रमाणे लक्ष निर्धार न करे के जीवन मां तेने शुं पामवु छे, तो तेने लक्ष नी सिद्धि माटे कयो मार्ग अपनाववो जोइए ते नक्की करी शके नहीं अने दिशाहीन थई आमतेम भटकतो रहे, परिणाम स्वरूप तेंनु मनुष्य जीवन निरर्थक पुरवार थाय !.

जेम कोई व्यक्ति चोराहे आवीने उभो होय, परंतु तेने पोतांना गंतव्य नुं भान न होय, ते क्यां जवा इच्छे छे ते विशे विचार न कर्यो होय तो तेने कया मार्गे प्रशस्त थवु जोइए ते नक्की करी शकशे नहिं. ते एक अथवा बीजा मार्ग मां भटकतो रहेशे. मनुष्य जीवन नी पण आवीज स्थिति छे. भगवद कृया थी मानव देह प्राप्त थयो छे, तो जीवन ने सार्थक करवा पोतांना अस्तित्व माटे सभान थई लक्ष विशे निश्चय करी मनुष्ये योग्य राह अपनाववो जोईए. .........क्रमशः........ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग, अने पूरुषार्थ" (७)

(चालु) .......एक वखत आपणा मनमां लक्ष निर्धार थई जाय के आपणे क्यां पहोंचवू छे के शुं प्राप्त करवुं छे, त्यांरे आपणे ते लक्ष सिद्ध करवा माटे मार्ग नक्की करी शकिए छीए. लक्ष नक्की कर्या विना जो एमज निकळी पडीए तो भटकी जवा नी स्थिति उत्पन्न थई शके छे. परंतु आपणे क्यां जवुं छे ते नक्की करी निकळिए अने चोराहे जइ उभा रहिए एटले आपणे कयो रस्तो पकडवो जोइए, के जेथी आपणी मंज़िले पहोंची शकिए तेनो निर्णय करवो मुश्केल होतुं नथी.

घणी वार एकज स्थाने पहोंचवाना बे-त्रण रस्ता पण होइ शके छे, परंतु ते रस्ताओ नी जाणकारी जो आपण ने होय, अथवा खात्रीलायक कोई मार्गदर्शक मली जाय तो आपणे सरलतम मार्ग नक्की करवो सहेलो थई पड़े. जीवन ना चौराहा पर पण एवीज वात छे. भगवद प्राप्ति ना विविध रस्ताओ - मार्गो शास्त्रोए सूचव्या छे, जेवाके कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग, उपासना मार्ग, भक्तिमार्ग वगेरे. प्रत्येक मार्ग नी विशेषताओ अने ते मार्गो पर चालवानी शरतो तेमज मर्यादाओं पण सूचवेल होय छे. ते प्रत्येक रस्ते कया गंतव्य स्थाने पहोंची शकाय तेनो पण शास्त्रोमा निर्देश करेलो होय छे. तदर्थ आपणे ते मार्ग नक्की करवो जोइए जेना पर चाली आपणे नक्की करेला लक्षने प्राप्त करी शकिए.

वास्तवमां कयो मार्ग आपणे अपनाववो जोइए ते नक्की करवा माटे गुरु नु मार्गदर्शन आवश्यक गणाय कारणके ते रस्ता नी बधी मर्यादाओं अने विशेषताओ थी तेओ सारीरीते वाकेफ होय छे. तेथी तेमनु मार्गदर्शन अति उपयोगी थई पड़े. विशेषतः अध्यात्म ने मार्गे चालवा सद्गुरु नु मार्गदर्शन अत्यावश्यक छे कारणके मनुष्य जीवन प्रारब्ध कर्मो ना फल रुपे भगवद कृपाथी मल्यु छे, अने जो निर्धारित लक्ष प्राप्त करवा योग्य राहे न चालिए तो भटकी जवाय अने जन्मारो निरर्थक थई जाय.

तदर्थ, स्पष्ट लक्ष नो निर्धार अने योग्य गुरु नुं वरण बन्ने महत्वना छे जेथी उचित मार्ग नुं चयन करी शकाय, जेना पर चाली प्राप्त थयेलु आपणु मानवजीवन सार्थक थई शके. महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी नो तद्विषयक उपदेश सारगर्भित छे. तेमना शिष्य पुरुषोत्तम जोशीए आपश्रीने पुछेलूं के "महाराज, कर्ममार्ग मोटो के ज्ञानमार्ग ?". श्रीमहाप्रभुजीए जवाब आपेलो के "जेना मनमां जे मार्ग दृढ थाय, जे मार्गमां जेनो विश्वास होय, तेने गमतो एवो एज मार्ग मोटो; अने मोटो तो 'भक्तिमार्ग' छे, जेमां जीव कृतार्थ थाय छे..... क्रमशः ........... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पूरुषार्थ" (८)

श्रीमहाप्रभुजीए आपेलो जवाब सारगर्भित छे, तेंनु रहस्य जाणवू जरुरी गणाय. कर्ममार्ग अने ज्ञानमार्ग शास्रो द्वारा पतिपादित छे, तेथी प्रमाणित छे. जो आपणु लक्ष 'मोक्ष' छे, जन्म-मरण नी घटमाल मां थी मुक्ति मेलववानु छे, तो आमाथी कोई पण एक मार्ग तेने माटे उपयुक्त छे, तेमाथी आपणो मनोपसंद मार्ग आपणे अपनावी शकिए. परंतु आ मार्गो नी विशेषताओ अने मर्यादाओं छे जे समजवी जोइए जेथी आपणे योग्य निर्णय लइ शकिए.

वेद ना पूर्वकाण्डमा कर्म करवुं अर्थात यज्ञ करवा ना विविध प्रकारो बताव्या छे, जेनाथी विभिन्न प्रकार नी फल प्राप्ति थाय छे. मानव जीवन ना तमाम क्षेत्रमां कर्म करवुं आवश्यक होय छे. परंतु कर्म ने आपणे केवीरिते यज्ञ बनावी शकिए ते समजवू जरुरी छे. गीतामा कर्म करनारे फल नी आशा न राखवानो उपदेश आपवामां आव्यो छे. कर्म नो नियामक अने फल आपनार ईश्वर छे. कर्म करनारे कर्तापणा नो भाव न राखता, ते करावनार प्रभु छे, तेओ ज कर्म ना प्रेरक छे तेम समजवु जोइए.

वळी कर्ममार्ग नुं फल अनित्य छे. पुण्यकर्म - सत्कर्म ना परिणामे प्राप्त थतां फल नो उपभोग पछी पुनः जीव जन्म-मरण ना चकरावा मा आवी जाय छे. कर्ममार्ग घणो कठिन ने क्लेशवाळो छे. कर्ममार्ग मा फल प्राप्ति माटे देश, काल, द्रव्य, कर्म, कर्ता अने मन्त्र शुद्ध होवा आवश्यक छे, अन्यथा

कर्म नी फलदायिता होइ शकती नथी. विशेषतः कलियुग मा तो तेनी संभावना नहिवत छे, जेनु विस्तारपूर्वक वर्णन श्रीवल्लभाचार्यजी पोताना 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थ मा कर्यु छे, अने श्रीकृष्णनी शरणागति नो विकल्प बताव्यो छे.

तेज प्रमाणे शंकराचार्यजी ज्ञान द्वारा भगवान नी प्राप्ति नो उपाय सूचवे छे, कारणके तेओ ब्रह्म ने ज्ञान स्वरुपे समजे छे. जेवी रीते कर्मेन्द्रियों कर्म करवा माटे छे तेम ज्ञानेन्द्रियो ज्ञानप्राप्ति माटे छे. अलौकिक ब्रह्म नी प्राप्ति माटे मात्र बुद्धिजन्य ज्ञान नहीं परंतु शास्त्र द्वारा मेलवेलु ज्ञान उपयोगी छे. तेथीशंकराचार्यजी कहे छे तेम 'प्रस्थानत्रयी' - वेद, गीता अने ब्रह्मसूत्रों ना ऊडाणपूर्वक ना ज्ञान द्वारा अज्ञान दूर थतां आत्मा नी साची ओळख थाय त्यारे पोताना मां ब्रह्मभाव उत्पन्न थाय. तदुपरान्त ज्ञानमार्ग नी सिद्धि माटे साधन चतुष्ट्य - वैराग्य, नित्य-अनित्य नो विवेक , शम-दमादि, तथा मुमुक्षत्व आवश्यक छे. ज्ञानमार्ग नु फल मोक्ष अर्थात अक्षरब्रह्म मा सायुज्य छे.

उपरोक्त हकीकतों थी समजी शकाय छे के आ मार्गो - कर्ममार्ग तथा ज्ञानमार्ग नी केवी मर्यादाओं छे,जे जाणी ने ते मार्गे चालवा नो निर्णय लेवो जोइए. .... क्रमशः ......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पुरुषार्थ" (९)

अगाउ कह्यु तेम कर्ममार्ग अने ज्ञानमार्ग मोक्ष प्राप्ति ना शास्त्रोक्त साधन छे. ते मार्गो पर चालीने स्वर्गादि सुख के ब्रह्म मा एकरुप थवा सुधी नु फल प्राप्त थई शके छे. जो आपणु लक्ष तेवां प्रकारनु होय तो ते मार्गो अपनाववां जोइए. परंतु ए मार्गो पर चालता पहेलां तेनी मर्यादाओ के विशेषताओं समजी लेवी जोइए, जेवीरीते आपणे कोई गंतव्य स्थाने पहोंचवा माटे कोई मार्ग ने पसंद करीए त्यारे ते मार्गो नी विशेषताओं, तेमां आवता अवरोधों इत्यादिथी माहितगार थतां होईए छिए.

केटलाक रस्ता लाम्बा होय छे, तो बीजा टूंका. केटलाक रस्ते नदी-नाला पड़ता होय छे, तेमां जंगल के पहाड़ी इलाका आवता होय छे, जंगली प्राणियो के लुंटारा नो डर होय छे.आवी अनेक बाबतोथी अवगत थया पछीज आपणे ते मार्गे प्रस्थान करीए छीए. तेवीज रीते मोक्षप्राप्ति जो आपणु लक्ष होय तो, कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग वगेरे विशे जाणी लेवु जोइए कारणके प्रत्येक नी विशिष्ठ लाक्षणिकता अने सीमा होय छे.

वेदना पूर्वकाण्ड जेने 'कर्मकांड' पण कहेवाय छे, तेमां विविध प्रकारना यज्ञ-यागादि ना विधान करवामां आव्या छे. जुदा जुदा प्रकारना यज्ञ करवाथी भिन्न भिन्न फल नी प्राप्ति थाय छे. कर्म करवु ए मनुष्य जीवन साथे जोड़ायेली प्रक्रिया छे. कोई कर्म कर्या सिवाय रही शकतु नथी. तदर्थ भगवाने आपणने कर्मेन्द्रियों आपेली छे. शास्त्र समझावे छे के ज्यारे आपणे कोई कर्म करीए छिए, चाहे ते सत्कर्म होय के दुष्कर्म, त्यांरे तेनाथी प्राप्त थनारू फल निश्चित थई जाय छे जेने 'अपूर्व' कहेवाय छे. परंतु ते फल क्यारे प्राप्त थशे, आ जन्म मां के पछीना कोई जन्ममां ते आपणे जाणी शकता नथी.

आपणा कर्मो नु फल भोगववु अनिवार्य होय छे. तेथी कर्म बंधन रूप छे, कारणके ते भोगववा कोइक योनी मा जन्म लेवो पड़े छे. आम कर्म-फल ने भोगववा जन्म-मरण नुं चक्कर चालतु रहे छे. कर्म बंधनकर्ता न थाय तेने माटे शास्त्रोमा 'निष्काम कर्म' करवा नी आज्ञा करवामा आवी छे. आपणे करेला कर्म नुं फल प्रभूने अर्पण करी देवाथी ते बंधनकर्ता बनता नथी.

विविध प्रकारना यज्ञकर्मो द्वारा फल प्राप्ति माटे तेना अंगों - देश, काल, द्रव्य, मन्त्र, कर्ता अने कर्म शुद्ध होवा आवश्यक छे. जो आ छ अंगों मांथी एक पण अशुद्ध होय तो ते कर्म फलदायी बनतु नथी. वर्तमान विपरीत काल मा ए सर्वे अंगों नी शुद्धि असम्भवित छे, जेना कारणे तेनाथी थता फलनी प्राप्ति संदिग्ध छे. कोई पण कर्म द्वारा थती फल प्राप्ति नुं परिणाम शास्वत होतुं नथी. ते फल भोगवाई जाय एटले पुनः जन्म-मरण नी घटमाल मां जीवात्माए आवी जवू पड़े छे. आम कर्ममार्ग नी मर्यादाओं छे. क्रमशः (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "लक्ष, मार्ग अने पुरुषार्थ" (१०)

क्रमशः ....... 'ज्ञान मार्ग' पण सरल नथी. तेने माटे उपरोक्त 'साधन चतूष्टय' मां बतावेल बाबतो नुं आचरण करवुं आवश्यक छे. ज्ञान ना त्रण प्रभेदों - सात्विक, राजस अने तामस गीतामा बताववा मां जाव्या छे (गीता १८/ २०-२२).

सात्विक ज्ञान नुं लक्षण बतावतां कहयुं छे के "सर्व भूतो (प्राणी मात्र) मां जे ज्ञान थी एक ने अव्यय तरीके निहाळे छे अने अविभक्त भाव ने जुए छे, तेनुं नाम 'सात्विक ज्ञान' छे". अहीं ए समाजाव्यू छे के जुदा जुदा घट-पटादी पदार्थो मां तथा नामरूपादि मां एकज अनुस्यूत ब्रहम ने जेनाथी जुए छे ते 'सात्विक ज्ञान'. आवुं ज्ञान 'शुद्धाद्वैत'होय छे

जोके शंकराचार्यजी नो 'केवलाद्वैत वाद' कारणावस्थापन्न ब्रहम ने ज सत्य माने छे, जेंने तेओ 'परब्रहम' कहे छे, ज्यारे कार्यावस्थापन्न ब्रहम जेंने तेओ 'अपर ब्रहम' नी संज्ञा आपे छे, तेने 'माया विशिष्ठ' होवाथी मिथ्या बतावे छे. तेमना मते नामरूपादि जे दृष्टिगोचर थाय छे, ते अविद्याने लीधे होय छे.

द्वैत ज्ञान नी प्रतीति ने 'राजस ज्ञान' कहेवाय छे ज्यारे 'तामस ज्ञान' नुं लक्षण ए छे के ज्ञानी एक कार्य-रूप भूत ने जे जाणे छे तेने ज सर्वस्व मानी तेमां आसक्त थाय छे. तेने तत्त्व नुं साचू ज्ञान होतुं नथी.

आ त्रण प्रकार ना ज्ञानी मां 'सात्विक ज्ञानी' सर्वथी उत्तम छे, जेने गीता मां भगवाने 'स्थितप्रज्ञ' कहयो छे. तेणे सर्व कामनाओ नो त्याग करेलो होय छे. ते फ़क्त आत्मा नो ज विचार करे छे. सुख - दुःख बन्ने तेने माटे सरखा होय छे. दुःख मा ते उद्विग्न थतो नथी के सुख मां फुलाई जतो नथी. ते राग, भय अने क्रोध थी मुक्त होय छे. ते कोइना ऊपर प्रसन्न थतो नथी के कोई नो तिरस्कार करतो नथी. ते निर्मल अने निरहंकार होय छे. आ प्रकार ना ज्ञान नुं फल अक्षरब्रहम मां लय अथवा प्रवेश छे, जेने मोक्ष कहे छे. परंतु अक्षरब्रहम गणितानंद छे, ज्यारे पुरुषोत्तम अगणितानन्द छे, जेनी प्राप्ति आ प्रकार ना ज्ञान द्वारा थई शकति नथी. क्रमशः......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)